c. नि 1) dejicere, deponere. Lass. 12. 9.: लङ्कुकाम् एकां मुनो ऽग्रे निक्षिप्तवती· - निक्षिप्ताक्ष dejectos oculos habens, *c. loc. loci.* Gita Gov. 12. 1.: शयने निक्षिप्ताक्षीम् उवाच हरिः प्रियाम्; - वर्णान् निक्षेप्तुम् litteras dejicere, i. e. scribere (cf. Ur. 24. 15.: भूर्जपत्रगतो ऽयम् अक्षरविन्यासः); *Caus.* facere ut aliquis scribat *vel* inscribat. Ragh. 7. 62.: सशोनितैस् तेन शिलीमुखाग्रैर् निक्षेपिताः केतुषु पार्थिवानाम्... वर्णाः (Schol. Calc. निक्षेपिताः = अन्यैर् निवेशिताः); H. 1. 24.: तत्र निक्षिप्य तान् सर्वान्· 2) tradere, *c. loc. pers.* N. 8. 20.: मम ज्ञातिषु निक्षिप्य दारकौ; Man. 8. 179.: आर्ये निक्षेपन् निक्षिपेद् बुधः·

c. परि circumjicere, circumspergere, circumfundere. Ram. III. 60. 100.: अन्नास्तरणकं राज्ञः समन्तात् परिचिक्षिपुः; Mah. 1. 1306.: काननञ्च मनोरमं सागराम्बुपरिक्षिप्तम्·

c. प्र projicere. Su. 2. 14.: अग्निहोत्राणि प्रक्षिपन्त्य् अप्सु; M. 15.

c. वि *e. c.* बाहू brachia jactare, dispergere. Ram. III. 56. 15.

c. सम् contrahere, corripere. Man. 7. 34.: सङ्क्षिप्यते यशो लोके (Schol. सङ्कोचम् एति); N. 4. 9.

2. क्षिप् 4. *p.* *id.*

क्षिप्र (r. क्षिप् s. र्) celer. क्षिप्रम् *Adv.* cito. In. 5. 51. (Cf. κραιπ-νός, v. क्षपस्·)

क्षिव् 1. et 4. *p.*: क्षेवामि, क्षीव्यामि, gr. 332. (निरसने *K.* निवासे *V.*) ejicere; habitare (क्षिव् ex क्षिप् ortum esse videtur, attenuato प् in व्, sicut पिवामि bibo dicitur pro पिपामि, v. पा·)

क्षी 1. *p.* perdere, exstinguere, delere. *Part. pass.* क्षीण perditus, deletus. Hit.: क्षीणेषु वित्तेषु· क्षीणपाप· (Haec radix cohaeret cum क्षि et क्षै·)

1. क्षीव् 1. *p.* i. q. क्षिव्, unde productâ vocali ortum est.

2. क्षीव् vel क्षीब् 1. *a.* (मदे *K.* दर्पे *V.*) ebrium esse; superbum esse. (Hib. *siobhas* «rage, madness».)

क्षीर *n.* (ut mihi videtur e क्षार, a r. क्षर् s. अ, attenuato आ in ई, cf. gr. 308.) 1) aqua. 2) lac.

क्षु 2. *p.*: क्षौमि (शब्दे *K.* क्षुते *V.*) sonum edere, sternutare. (Huc retulerim lith. *cz'audmi* sternuto = क्षौमि, adjecto *d* (cf. क्षुत्) et mutato क्ष् in *cz'* = च्·)

क्षुम v. क्षुद्, gr. 607.

क्षुत् *f.* (r. क्षु, adjecto त्, sicut in fine compp. gr. 643.) sternutamentum. Am.

क्षुत *m.* et क्षुता *f.* (r. क्षु s. त) *id.* Am.

क्षुद् 7. *p. a.* क्षुणद्मि, क्षुन्दे contundere, conterere. *Part. pass.* क्षुण्ण. Dev. 3. 24.: खुरक्षुण्णमहीतलः; 9. 35.: दंष्ट्राक्षुण्णशिरोधर· (Fortasse huc pertinet gr. ξύω, ξέω pro ξεύω, adjecto Gunae incremento; si ita est, sibilans in formis ξυσ-τός, ξεσ-τός ad radicem pertinet, mutato, ex generali euphoniae lege, δ in σ. Lith. *skausti* dolet, e *skaud-ti, skaudéjimas* dolor; *pra-skunda* dolere incipit, *nu-skaudinu* noceo, transposito *ks* in *sk.*)

c. वि *id.* Dev. 3. 25.: वेगभ्रमणविक्षुण्णा मही·

c. सम् *id.* Ram. III. 63. 10.: बबन्धुर् बन्धनीयांश्च क्षोभ्यान् सञ्चुक्षुडुस् तथा·

क्षुद्र (r. क्षुद् s. र्) 1) parvus, debilis. M. 6. 2) *trop.* vilis, abjectus, humilis. In. 2. 6. Dr. 9. 21. (Cf. lith. *kûdikis* infans, pers. کودک *kûdek* parvus, puer.)

1. क्षुध् 4. *p.* esurire. क्षुधित esuriens. N. 11. 12. 18. 12. (Goth. *grêdôn* esurire, mutatâ sibilante in *r*, sicut in lat. crepusculum = क्षपस्, in gr. ῥίπτω = क्षिप्, v. क्षम्·)

2. क्षुध् *f.* (a praec.) fames. Su. 1. 8.

क्षुधा *f.* (r. क्षुध् s. आ) fames.

क्षुप *m.* frutex. H. 1. 18.

क्षुब्ध v. क्षुभ्·

क्षुब्धता *f.* (a praec. s. ता) agitatio. Bhar. 3. 94.: अब्धेः क्षुब्धता·

क्षुभ् 1. *a.* 4. *p.* क्षोभे, क्षुभ्यामि commoveri, agitari, conturbari. *Part. pass.* क्षुब्ध *vel* क्षुभित· Ram. I. 52. 14.: क्षुभिताः सागराः सर्वे; III. 79. 20.: उष्णाक्षुब्धसलिल; I. 52. 14.: यत् तेजः क्षुभितं ह्य् अद्य तद् धरा धारयिष्यति· *Caus. et cl.* 9. *p.*: क्षोभयामि, क्षुभ्नामि agitare. M. 42.: क्षोभ्यमाणा महावातैः सा नौस् तस्मिन् महो-